नारी

संबंधों का अनुपम व्याकरण

समर्थ नारी गौरव

ऋतु कोचर

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

नारी संबंधों का अनुपम व्याकरण

ऋतु कोचर

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-90995-03-5

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- ऋतु कोचर 2021
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY RITU KOCHAR

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

नारी संबंधों का अनुपम व्याकरण

ये शब्द कानों में पड़ते ही मां, बहन, बेटी, पत्नी, बहू सारे किरदार जहन में आ जाते हैं, अनेक ग्रंथ स्त्री की महिमा से भरे पड़े हैं, समय समय पर स्त्री सशक्तीकरण के अनेक आयोजन होते व कानून बनते रहते हैं, पर यथार्थ के धरातल पर तो स्त्री को अपनी सुरक्षित एवम् सशक्त छवि बनाने में बहुत वक्त है, ऐसा नहीं है कि कोई प्रयास ही नहीं कर रहा है, पर कई तबके ऐसे है जिन्हें स्त्री के पुरुषों से आगे बढ़ने या सफल होने में बहुत ऐतराज है बड़े शर्म की बात है कि उनमें हमारी कुछ माताएं बहनें भी शामिल है, कहने का तात्पर्य की नारी ही नारी की दुश्मन बन रहीं है।

जहां पुरुषों को नए नए अवसर के लिए लिए योग्य समझा जाता है वहीं हमारा स्त्री वर्ग भी तो अपने को सिद्ध करने में किसी भी क्षेत्र की मोहताज नहीं है, बात स्वयं की आंतरिक योग्यता को पहचान कर उसे निखारने की आवश्यकता है, समाज के दृष्टिकोण को थोड़ा

चमकाना भी जरूरी है, नारी को नारी की शक्ति बनना चाहिए न कि बैरी।

यूं तो नारी सशक्तिकरण हेतु पहले भी प्रयास किए जा चुके हैं, और अनेक संस्थाएं इस ओर प्रयासरत है परन्तु आए दिन स्त्री पर होते बलात्कार, दहेज के लिए प्रताड़ना, कार्यक्षेत्र में भी उनकी अवहेलना आदि से मन व्यथित हो जाता है, आवश्यकता है और कठोर नियम, कानूनों की एवम् समाज के हर वर्ग की सजगता ओर चेतना कि ताकि स्त्री पर कोई तरेरती आंखें प्रहार ही न कर सके,हर बढ़ती बेटी को अवहेलना नहीं प्रोत्साहन मिले जैसे बेटे को मिलता है, हर बेटी पढ़े और खूब आगे बड़े इस काबिल बने की कोई उसे अपनी जागीर न समझे, खुद तो समर्थ बने और हर बढ़ती बेटी का हमसाया बने, और इस प्रयास को अपने घर से ही शुरू करना होगा, क्यूंकि हम बढ़ेगें तो देश बढ़ेगा।

नारी शक्ति को सलाम

ऋतु कोचर, कटंगी

साधारण स्त्री से लेखिका का सफर

आज मुझे लगता है जैसे
कुछ तो मैंने पाया है,
ज्यादा नहीं तो थोड़ा सही
कुछ तो कदम बढ़ाया है,
हुनर तो लगभग होता सबमें
बस राह सही मिल जाए तो,
सही मार्गदर्शक मिल जाए
फिर उसपर चार चाँद लगाए वो,
गृहिणी से लेखक का सफर
बड़ा मनोरम लगता है,
मेरी भी कुछ पहचान बन गई
सुनकर अच्छा लगता है,
पत्नी, मां, बहु, बेटी ऐसे
कई किरदार निभाए हैं,
कर्तव्य निष्ठा से पूर्ण किये हैं
जो भी हिस्से में आये हैं,

सफर कई करते हैं हम सब
चाहे हो या अनचाहे हो,
पर थकने नहीं देते अपने
कठिन भले वो राहें हो,
चल पड़े जो कदम है मेरे
सबका साथ जरूरी है,
आशीर्वाद यूँ ही बना रहे तो
हर आशा होती पूरी है।

स्त्री के रूप

देवी दुर्गा और भवानी और
कई हैं स्त्री के रूप,
दैत्यों का बन करके काल
बनाती है जो विराट स्वरूप,
काश ऐसी अनुपम शक्ति
हर नारी में भर जाए,
बाल न बांका कर पाए कोई
स्वयं की रक्षा कर पाए,
भरी हुई है अनंत शक्ति
बस अंतर को जगाना है,
कोई राक्षस अपमान न करे
अपना मान खुद पाना है,
जुर्रत कोई करे यदि तो
चंडी का तुम रूप धरो,
हारना नहीं हराना है तुम्हें
प्रतिशोध को उर में भरो,
पहचानो खुद अपनी शक्ति
क्यों कोई संहरण होगा,
कोई अब अबला ना होगी,
ना कोई चीरहरण होगा।

उड़ान चाहती हूँ

बेटी हूँ मैं
उड़ान चाहती हूँ
ज्यादा नहीं मैं चाहूँ
सम्मान चाहती हूँ
बेटी हूँ मैं तुम्हारी
उड़ान चाहती हूँ,
सारा जग भरा है
पुरुषों के पुरुषत्व से
अपने लिए वहीं पर
पहचान चाहती हूँ,
तु भी है मैं भी मिट्टी
आत्मा समान अपनी
व्यवहार हो बराबर
वरदान चाहती हूँ,
दोनो को जनने वाली
माता भी एक ही है

प्यार मांगा तो क्या गलत
मैं नादान चाहती हूँ,
हर मुश्किल घड़ी में
डटकर खड़ी रहूँगी
सर पर हाथ उनका
मेरे भगवान चाहती हूँ,
अधिकार का जो मेरे
है मुझको मिले बस
अपने हिस्से का पूरा
आसमान चाहती हूँ,
बेटी हूँ तुम्हारी
उड़ान चाहती हूँ.....

पूजा

प्रतिमा दुर्गा की यदि पूजो
पर प्रति मां को भी तो पूजो,
ये नौ दिवस ही क्यों पूजो
हर दिन और हर रात को पूजो,
पर काफी नहीं सिर्फ पूजा
आदर के प्यार की प्यासी है,
हर मां में स्नेह झलकता है
समझो मत उसको दासी है,
बिन शर्तों के हर दिन खटती है
अपने बागबान की माली है
आंच नहीं आने देती हम पर
बन जाती वो शेरा वाली है,
नौ रूप है जैसे देवी के
मुझे मां के भी रूप अनेक लगे
अवसर जैसा स्वरूप वो बदले
बदले फिर भी वो नेक लगे,
जरूरत न होती गर तुमने
अपनी मां को यदि पूजा है
ईश्वर का साक्षात् रूप है जो
एक मां के सम नहीं दूजा है।

नारी की कलम से.....

अच्छा लगता है
जब कोई मुझे समझता है
मेरे बारे में सोचता है,
अपना सा लगता है
बहुत अच्छा लगता है....
बहु अभी तुम्हारे हँसने खेलने
के दिन हैं घर की चिंता मत करो,
तब सास भी मां सी लगती है
बड़ा अच्छा लगता है.....
मेरी भावनाओं को बोलने से पहले
समझना प्यार से समझाना,
पति का यूँ फ़िक्रमंद होना
अच्छा लगता है.....
भाभी कितना काम करती हो
छोड़ो भला मैं कर देती हूँ
ननंद का यूँ हक जताना
अच्छा लगता है.....
मम्मी आज शाम का खाना
मैं बना दूँगी आप चिंता मत करो

बेटी का ये जिम्मेदाराना व्यवहार
अच्छा लगता है.....
मेरे थोड़ी देर कहीं चले जाने
पर घर भर में मम्मी मम्मी
आवाज लगाना, फोन करके
कब आओगे ये प्रश्न करना
अच्छा लगता है.....
किसी मुसीबत के होने पर
मैं हूँ न इनका ये कहना
एक मजबूत संबल मिलता है
अच्छा लगता है.....
आप हो तो हमें चिंता नहीं है
बच्चों का ये कहना.....
सब कितना अच्छे से संभाल
लेती हो पतिदेव का प्रोत्साहन....
सब एक नई स्फुर्ति से भर देता है
सचमुच बहुत अच्छा लगता है।

हिचक

हिचक नहीं मुझे सच कहने में
जैसी भी हूँ वैसी रहने में,
क्यों दुनिया की परवाह करना
व्यर्थ दूसरों की चिंता में मरना,
पंख पसार उड़ान है भरना
नहीं किया जो अब तक करना,
संकोच ही था जो रोके रखता
अवसर की भी राह था तकता,
अब की बार हिम्मत जो कर लूँ
फिर खुशियों से झोली भर लूँ,
बढे चलो आकाश बड़ा है
लक्ष्य भी तो सामने ही खड़ा है,
कोई नहीं तुमको बोलेगा
रिश्तों में ही तुमको तोलेगा,
स्वार्थ सदा तुम्हें रोके हुए है
इसमें ही तो कितने धोखे हुए है,

माना की जिम्मेदारियां है निभाना
अपने लिए भी कुछ आगे आना,
पर खुद को बीड़ा उठाना पड़ेगा
अपने लिए तो आगे आना पड़ेगा,
चलो कुछ अपने लिए जीते हैं
उधड़े सपने फिर से सीते हैं।

स्त्री तुझे कहाँ अवकाश

स्त्री तुझे कहाँ अवकाश

कर्तव्य पथ पर रही अडिग

स्त्री तुझे कहाँ अवकाश,

हर रिश्ता है निर्भर तुझपर

यूँ तो सबके लिए खास,

स्त्री तुझे.....

बेटी बनकर पीहर संभाले

तेरा होना जैसे मधुमास,

स्त्री तुझे.....

सासर उम्मीद करे तुझसे ही

सबको है तुझसे ही आस,

स्त्री तुझे.....

माँ बनकर सबको छाया दे

तेरे प्यार की सबको प्यास,

स्त्री तुझे.....

खुदको भूलकर जीना है तुझे

जी नहीं सकती तू बिंदास,

स्त्री तुझे.....

स्वयं में स्वयं को खोजने की

करती कोशिश और अरदास,

स्त्री तुझे.....

त्याग न भूलो एक स्त्री के

मान करो बस यही है आस,

सबके लिए बनूं मैं खास,

स्त्री तुझे कहाँ अवकाश।

ऋतु कोचर, कटंगी

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

ऋतु कोचर
कटंगी

नारी तेरी बारी है

जीवन के हर तीक्ष्ण गरल को
पीना मुझको आ जाता,
सच कहती हूँ औरों की तरह
जीना मुझको आ जाता,
गलत सहन न कर पाऊँ मैं
अपमान मुझे तो जहर लगे
नारी के चरित्र पे जो उठे
उन गिध्दों को कहर लगे,
देख अन्य घटनाएं जो यदि
दिल न किसी का दहलता है,
इस तकलीफ से बहलाले जितना
दिल न किसी का बहलता है,
आज भी किसी बेटी की अजमत
लूट जाना यदि जारी है
देर नहीं दिन दूर नहीं वो
सर्वनाश की बारी है,
ये देश जहाँ पर पूजी जाती
हर कन्या हर नारी है
चाहे जितना पीले गरल पर
अब नारी तेरी बारी है,
संग्राम भले कितने ही आते
तू न कभी भी हारी है
नारी तेरी बारी है
हां नारी तेरी बारी है।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं संस्था – 9424765259

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क– 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com
अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

मूल्य 50/–
978-93-90995-03-5